

विष्णु
म. चातुर्वर्ग. शासक. अ. १ प्र. १८. म. १८. १८. १८. १८.

म. चातुर्वर्ग.
जन्म.
कथनावीय.
वाधा वेनक.

शाखा नमस्त्वयि	
225	

ASTA 100000

मन्त्राजुर्वेदके

ॐ नमो श्री वज्रसत्वाय नमः॥ ॥ स वा वयनक॥ विधि॥ नक
 संपूजा तत्र दयक शृंगजा गतश्वनजी ज्वरनि लाज नशुं नय
 पाता॥ ॐ का॥ यका॥ जजं॥ धत॥ साष॥ धत कसि॥ ॐ गलसि
 हत॥ विधिकर्म मालक दयक॥ ॥ नक संधा पनायाया॥
 कल संधा म नष च गव्य पाउ दिदिवति॥ दिगुति सम
 व ~~ध~~ पापिद्वथ निष्ठा पनायाया॥ ॥ त्रिनास्यंगु न मधुन
 याया॥ पक्व गव्ये ~~ध~~ धन॥ पक्व गव्ये विया॥ स धृत नय म
 धृत पित्त कि नत लख वति विसर्जित॥ समाधियाया॥ कल

मनश्चापि पूजा ॥ दंडा पूजा ॥ दिदिव तिविय ॥ ॥ धनभा
वात्र सस्यं हय ॥ स्वस्मिन् गस्या ॥ गुन स धुल दनक ॥ मन
पूजा याय ॥ विसर्ज नयाय ॥ धन मूचाया न हावना न
यवा क्क ॥ उं स्र वा व शुद्धा ह्यादि ॥ हाहा ग्निल उ ॥ व
ज नाचा मन हन नाय ॥ ॥ धन कल ठा हि खक विय ॥
वाक ॥ उं स्र व क्क नल वल धर्म व डि मूद्रा गलन ॥ मसि न
स्र द्विपद स्र वला चन स्र एव द्ः ख विना सक स्र न म्म
ल एव नु सानिक वषा घं ॥ ॥ धन धन कस्मिन् गत सिस्त

सर्वो गया गुदिगगा सर्वो विदिगुदया नव ३ सूर्यया नवा १
सूर्याया नवा २ रथा काति नम चाया ननक ॥ वाक ॥ ॐ ॥ अ म
व न थाग नद्य नमध प्राक्षस्य नरु स्वाहा ॥ ॥ कं ठालरवन
नावायक ॥ ॐ ॥ स्वाहा ॥ ॥ स्व पति नयक स्व पालन नावा
यक ॥ ॥ धनकलवा ॥ न स्य कलखद्योयः ॥ ॥ धनजाकि
कल १ नस्य ॥ कथरव ला स वि कं न स्यं ॥ कि ग्वलज न स्यं द्वाय
कं विकन न नित्यक ॥ ॐ ॥ सर्व न थाग न काय वि स्र धन स्वाहा
धनमि वृत्त न स अंगुतिवान स्य दिगगी स्पंतडा फ्राय २

॥ॐ सर्वं सर्वं सुखं तस्मात् ॥ ॥ धनं कुं सा रि ख क विय
ॐ सर्वं न धा ग ग न त व त ध म्म व र्जि म्म ड ग ल न स रि न
दि प द स्य व लो च न स्य ए व द्ख वि नो स क स्य ग त्म ग लं ए
व तु म्म कि क लं वा यं ॥ धनं प त्त र ग र्थ न ह या येः ना म द्ध ये ॐ
आः व ज्ज ती ल क भ्ख न स्वा हाः ॥ ॥ धनं व ज्ज जा स्य प क र ग स्य
न गिय का ॐ अ म्म क ए व न धा ग ग ना म द्ध र्ख स्य ॥ ॥ धनं मि वृ
त न द द्वा सें ध ति स गं न विय ॥ ल न द्ध न क ॥ मि हं स्त य ॥ व ज्ज न
थि या ॐ स प्र गि ति त व र्ज स्वा हा ॥ धनं वा क प ज्ज गाय ॥

मधुलपिल॥ किं न ज्ञे॥ अस्मिन्निदं सद्यं कृता विन पञ्चा॥ द
कृता पञ्चा॥ विन न तिर क॥ दि गुप्त मय द्याय॥ दि दि वलि द्याय॥
दि गुप्त मय काय॥ समयाचक॥ गन चक॥ कल द्याय॥ मा सि
ष्टीय॥ स्वा का काय॥ ॥ ॐ ति जा न कर्म विधि स मा फः॥
॥ ०॥ ॥ ॐ ॥ उन मा ऋ वज स स्वाय॥ ॥ ॐ न हल प्रा सन विधि
कर्म विधि (थं या त सा॥ फु प ख न॥ सष य लु सि धान॥
द्याय ना र लियाया॥ कर्म स मा त द्धे॥ ॥ सति ख द्ध॥ ज पो पि
षाल पद काय॥ पञ्चा एत इ ज द य क न डा क्क था त त सा॥ न डा

कं ध्यायस्व ध्यायनायाया ॥ कं न सद्यः मयपक्वगर्वपात्रा ॥ सि
द्यतिनकं पुडागिसातुकुमासि दुब्बादिदिवलि उपंताय ॥ ध्यापि
शुदिगुति सङ्कचं शु ॥ कमा लित्या ॥ षायदद्वा ध्यापि सङ्कच
दद्वा ध्यापि ध्यायनायाया ॥ ॥ धनसूर्या ॥ अद्यियाय ॥ पक्वगर्व
राधन ॥ पक्वगर्वविविध ॥ सिधल नय ॥ ॥ मधुपि स ॥
समाधि गाय ॥ महति हय ॥ ॥ धनसद्यः मंगल कं न
ओका ध्याय सतपजायाया ध्यापि पडा ॥ दडा पडा ॥ कोमा
ति पजायाय ॥ ॥ दिदिवलिविद्य ॥ ॥ धनसद्यः मंगल सद्यः
साक्षि सद्यः शुल मंगल सदनके ॥ मंगल पजायाय ॥ विमर्जनयाय कं

॥ ॥ अतः प्रयाया तस्मान्न वृद्धं लुप्तं संलवत ॥ वाक्का ॥ उच्यते ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ ॥ कथं मिलितं वज्रं तावामगदहोय ॥ चक्रं
यविय ॥ ॥ अतः कसलुषं न ह्यय ॥ उच्यते ॥ वज्रं न उच्यते ॥ उच्यते ॥
जपानि स मरुतिना च सहितं स्या ॥ अमाद्यं सिद्धिं कर्तुं गतं हि न
कर्तुं पत्रं मा ॥ ॥ अतः सिद्धिं कर्तुं गतं एव उच्यते ॥ कर्तुं वाद्यं ॥ ॥ अतः
गतास्यं गता ॥ एतं उच्यते ॥ स्वस्ति वाक्क पतय ॥ ॥ अतः
उपायं दिगतास्यं विय ॥ उच्यते ॥ वाक्क पतय ॥ ॥ दिगतास्यं
पतनं हि क ॥ उच्यते ॥ वाक्क पतय ॥ ॥ अतः सिद्धिं
सोध्यं तया ॥ उच्यते ॥ सर्वं संस्थानियं स्यात् ॥ ॥ दिगतास्यं विय ॥

ॐ षुदव ता ॥ वसु सूर्य याग याय ॥ ॥ धनमवायातनकं ॥ वाकं ॥
उज्ज ॥ समाधि हलुजिनयप्रनिनस्याहा ॥ ममसिनकं ॥ उज्ज
खाहानकानकं ॥ उसवयिषुकायस्याहा ॥ वाकमदिनकं ॥
मिपतिमा मयागलडाहाय ॥ ॥ धनजनकोक्रियायाय ॥
-- नकुठालखनहाया ॥ वाकं ॥ उज्जमगतं त्यादि ॥ ॥ धनव
सुय -- -- -- यकं ॥ उवाडेंगधुनकवास्यस्याहा ॥ ॥ नानाए
वनंति -- -- -- ॥ उमवावनेएखनस्याहा ॥ ॥ धनएजाहा
धनयाय ॥ उनमासर्ववधानां डाजोवतंददमस्याहा ॥ धातु
आशुवाय ॥ ॐ षुदव ता वंदु सूर्य याग ॥ ॥ नावायका ॥ उज्ज

५ स्वाहा॥ ॥ धैलसापतनि शसक गां नकें॥ ॥ ६ प्रा नाय स्वाहा॥
नाचायक॥ अंगुलीनेक॥ ७ ज प्रा नाय स्वाहा॥ नाचायक॥ ८ पतान
क॥ ९ समानाय स्वाहा॥ नाचायक॥ चालानक॥ १० द्या नाय स्वाहा॥
नाचायक॥ विलानक॥ व्यानाय नमः स्वाहा॥ नाचायक॥ मूलान
शपयितेका स्पनक॥ ११ दिव्या नाय समाना विधानपित्रन
स्वाहा॥ नकशायानावातासंगय॥ नाचायक॥ १२ अचमनप्रति
वृत्तस्वाहा॥ ॥ यातासकलेशा॥ तस्य कल द्वाय॥ पतनास्वलागय॥
स्नानमा लातकाषायक॥ १३ कृकारानकाषायक॥ सिंहनस्य॥ ५
वजनधिय॥ ॥ गवयग्वस्तविया॥ ॥ पतवाकपडायाय॥ मधुव

[illegible]

६

लिवायगुत्रमधुलयाय॥पंचगव्यस्वधन॥पक्वगव्यविया॥
 सिङ्गन्या॥मधुलपिसा॥किंनलषवसिहोय॥शीसमाधियाया॥
 कुंजसध्वंमगपूजा॥अग्निष्पनयाय॥इन्द्रहृतिखाय॥था
 पिपूजा॥दंडोष्जायाय॥दवगाहृतियाय॥॥धनमवात
 स्वसंहयडास्वस्तिवाकसवस्यगुत्रमधुलदनकमगपूजाया
 य॥निसर्जनयाय॥पक्वगव्यविया॥रावनावय॥स्वस्तिवाकप
 दया॥॥निलाजनवजगावामगहगाय॥॥धनलिवियामडा
 कल॥नया॥मलिषसयिकेगय॥थाकालिनदिगगास्यमया
 यागलडाकय॥॥थाकालिनकिंतगलयाजोनकसास्यह

३

आ ॐ लाहा मास मा सकव कं ॥ धननापिकयागहाषजायाय
हादकुना १ रेखुय ॥ नृकुलडाहपाया लडाहाय ॥ मखाया नृमि
धनक कनिकत्र सायक ॥ अ व हा मलन मो लकुयका ॥ कृष्ण
लेखनं मो लवायक ॥ फडा रथा संगय ॥ पकगव विरय ॥ ॥
धनमवाग धनाडा लुषुविक म मूका नुरे हाया ॥ या नकय गाय
५ डा लकय ग विरय ॥ वा क ॥ डवडा सं धिवः स्वाहा कय गान विरक ॥
॥ नाना ए नन रियका ॥ ड स व विरने एखन स्वाहा ॥ ॥ मि क सा न
लडाहाय ॥ ड हा स्वाहा ॥ ॥ लिडा विरुडा विमिवा लडाहाय ॥
ड वडा एष लडा स्वाहा ॥ ॥ हा मि गुगा विरय ॥ ड वडा नलडा ॥ ॥

